Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
Special Issue on Visual Culture, Performing Arts, and Social Media: An Interdisciplinary Analytical Perspective 7(8s)

WIDOWHOOD AND WOMEN: THE STATUS OF WIDOWS IN MEDIEVAL SOCIETY AND THE NEW PARADIGMS ESTABLISHED BY MEERA

वैधव्य और नारी: मध्यकालीन समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति और मीरा द्वारा स्थापित नए प्रतिमान

Ekta Pareek [1], Dr. Vandana Gajraj [2], Priti Sharma [3]

[1] Research Scholar, Hindi Department, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India
[2] Assistant Professor, Department of Humanities and Arts, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India
[3] Research Scholar, Hindi Department, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India

Received 25 February 2026
Accepted 24 April 2026
Published 15 May 2026

Corresponding Author
Ekta Pareek, ekta.pareek28@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v7.i8s.2026.8056

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: During the medieval period of Indian history—specifically the 15th and 16th centuries—the social and cultural status of women was highly complex and fraught with contradictions; within this context, the plight of widows was particularly pitiable and filled with suffering. During this era, the Bhakti Movement was at its zenith, raising powerful voices that advocated not only for spiritual liberation but also for equality between men and women. Yet, amidst these progressive currents, the condition of widows—particularly within high-caste families and the Rajput society—remained extremely wretched. Bound by rigid rules and strict discipline, the lives of these women had effectively become a state of "living death." In this epoch, merely existing was a curse for these widows—a punishment they were compelled to endure despite having committed no crime. During this medieval period, the concept of "feudal grandeur" for men was not limited merely to tangible forms of power—such as land, military might, or gold. Rather, within these high-caste families, a woman's status was evaluated solely based on her marital standing and the sons she had borne. The society of this era harbored an extremely parochial mindset regarding women's education, wherein the right to receive an education was restricted exclusively to girls born into high-caste families. It is against this backdrop that the name of Mirabai emerges as a symbol of rebellious consciousness—a figure who defied the established norms governing widows and, in doing so, introduced new philosophical and social perspectives to society. In this document, we will undertake a comprehensive analysis of Mirabai's life, her poetry, and the status of widows within the contemporary society—a context in which she established new spiritual paradigms.

Hindi: पंद्रहवीं एवं सोलहवीं शताब्दी के भारतीय इतिहास के मध्यकाल में सामाजिक और सांस्कृतिक रूप में महिलाओं की स्थिति बहुत ही जटिल एवं विसंगतियों से भरी हुई थी, जिसमें विधवा महिला की अवस्था अत्यंत ही दयनीय और कष्टों से भरी हुई थी। इस कालखंड में भक्ति आंदोलन अपने चरम पर था, जिसमें आध्यात्मिक मुक्ति के साथ पुरुष एवं नारी के मध्य समानता बनाने के लिए स्वर बुलंद थे । इन सबके साथ ही दूसरी ओर उच्च कुल में विशेषकर राजपूताना समाज में विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। इन महिलाओं का जीवन कठोर नियम और अनुशासन में बंधकर 'जीवित मृत्यु' के जैसा बन गया था। इस युग में इन विधवा महिलाओं के लिए जीवन जीना एक अभिशाप था, जिसे वे एक बिना अपराध के दंड के रूप में सहन कर रही थी। इस मध्यकाल में पुरुषों के लिए सामंती वैभव का मतलब केवल उनकी शक्ति जैसे- भूमि,सैन्य शक्ति और स्वर्ण तक ही सीमित नहीं था। इन उच्च कुलों में महिलाओं की स्थिति का अवलोकन केवल उनकी पाणिग्रहणिक स्थिति के साथ उनके द्वारा उत्पन्न किए हुए पुत्रों के आधार पर होता था। इस काल खंड के समाज में महिलाओं की शिक्षा को लेकर अत्यंत संकीर्ण विचारधारा थी। जिसमें केवल उच्च कुल में जन्म लेने वाली कन्याओं को ही शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। इसी संदर्भ में मीराबाई का नाम एक ऐसी विद्रोही सजगता के रूप में उदय होता है, जिन्होंने

विधवाओं के लिए स्थापित प्रतिमानों का विद्रोह करके समाज में नए दार्शनिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए। इस अभिलेख में हम समसामयिक समाज में मीराबाई के जीवन,उनके काव्य और विधवाओं की स्थिति का संपूर्ण विश्लेषण करेंगे जिसने समाज में नए आध्यात्मिक प्रतिमानों को स्थापित किया।

Keywords: Feudal, Marriage, Spiritual Liberation, Upanayana Ceremony, Widow Remarriage, Widowhood, Good Fortune, Rigveda, Religious Rituals, Subordinate, सामंती, पाणिग्रहणिक, आध्यात्मिक मुक्ति, उपनयन संस्कार, विधवा पुनर्विवाह, वैधव्य, सौभाग्य, ऋग्वेद, धार्मिक अनुष्ठान, अधीनस्थ

1. प्रस्तावना

वैदिक काल से लेकर मध्य काल के दौरान भारतीय समाज में विधवाओं की सामाजिक स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। इस कालखंड में महिलाओं के अधिकारों के पतन को समझने के लिए उसका ऐतिहासिक विश्लेषण करेंगे। ऋग्वेद के काल में महिलाओं को बहुत ही सम्मान जनक दृष्टि से देखा जाता था और उन्हें समाज में बराबरी का दर्जा मिला हुआ था, जैसे-बालिकाओं का उपनयन संस्कार, वेदों का अध्ययन आदि अधिकार उन्हें मिले हुए थे । इस काल में विधवा पुनर्विवाह जैसी प्रथाएँ चलन में थी । बालिकाओं को उनका जीवन साथी चुनने का सम्पूर्ण अधिकार था। विधवाओं के लिए कोई कठोर नियम नहीं थे, साथ ही वे हर धार्मिक अनुष्ठान में सक्रिय रूप से अपनी भूमिका निभाती थी।

परंतु इसके पश्चात उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों को मिलने वाले अधिकारों में कमी आयी। महिला को पुरुषों की संपत्ति माना जाने लगा और वे उनके अधीनस्थ रहने के लिए मजबूर बना दी गई। मध्यकाल आते-आते और विदेशी आक्रमणों के चलते महिलाओं पर प्रतिबंध लगा दिए गए। उन्हें घर की चारदीवारी के भीतर रहने के लिए बाध्य किया गया। वैधव्य को उनके पूर्व जन्म के पाप बताकर उनकी स्थिति को निम्न स्तर पर पहुँचा दिया।

2. वैधव्य एक सामाजिक अभिशाप

सोलहवीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में जब मीराबाई का जन्म तथा विवाह हुआ था, तब यह राज्य वीरता तथा सामंती गौरव का प्रतिबिम्ब था। लेकिन इन सबके बाद भी समाज में विधवाओं के लिए उनका जीवन अत्यंत कठिन और कष्टसाध्य था। महिलाओं को उनकी सौभाग्य की स्थिति के अनुसार ही शुभ और अशुभ का प्रतीक मान लिया जाता था । एक महिला को उसके पति की मृत्यु के पश्चात सहानुभूति न मिलकर तिरस्कार मिलता था। ये विधवाएँ परिवार के लिए बोझ बन जाती थी और समाज द्वारा बनाए गए कठोर नियमों के अधीन बँधकर रह जाती थी।

3. कठिन जीवन पद्धति तथा आहार पाबंदी

विधवा महिलाओं के जीवन को नियमित करने के लिए समाज ने बहुत ही कठोर नियम बना दिए, जिसमें उनका मुख्य उद्देश्य था कि इन महिलाओं की शारीरिक स्थिति आकर्षक नहीं रहे और उनके मन की इच्छाओं का दमन होता रहे। सामाजिक मान्यताओं के अनुसार मांस, तेज मसालों, प्याज़ और लहसुन का सेवन करने से कामेच्छा उत्तेजित होती है इसलिए उन्हें सिर्फ़ सात्विक आहार और दिन में एक बार खाने की अनुमति थी।

4. सती-प्रथा और जौहर की परंपरा

उस काल खंड में सती होने वाली महिला को देवी के रूप में पूजा जाता था। सती प्रथा बहुत ही पवित्र कार्य के रूप में प्रचलित थी। विधवाओं को उनकी सम्पत्ति से वंचित करने के लिए उन्हें सती करवाया जाता था। यदि महिला स्वेच्छा से सती नहीं होती थी तो उसे नशीला पदार्थ खिलाकर या ज़बरदस्ती उसके पति की चिता पर बैठा दिया जाता था।

इसी के साथ राजपूतों में 'जौहर' करने की प्रथा भी प्रचलित थी। जब युद्ध में राजा और उनके सैनिक हारने लगते थे तब उनकी पत्नियाँ सामूहिक आत्मदाह करती थी।जिससे वे दुश्मन के द्वारा अपमानित न हो सके। इस प्रथा को राजपूत समाज में 'सम्मान' तथा 'पवित्रता' का जुनून माना जाता था। 'सती' और 'जौहर' दोनों ही वीरता के रूप माने जाते थे। समाज में विधवाओं का ज़िंदा रहना उनके और उनके परिवार के लिए लज्जाजनक बात थी।

5. स्त्री-सशक्तिकरण समर्थक के रूप में मीरा का प्रवेश

मीरा का जन्म मेड़ता के राठौड़ वंश में सन् 1498 ई में हुआ था। उनका लालन-पालन वैष्णव भक्ति के परिवेश में हुआ था। सिसोदिया वंश में पैदा हुए राजकुमार भोजराज के साथ मीरा का विवाह हुआ। उनका विवाह दो प्रतिष्ठित राजपूत वंशों का समागम था, परंतु उनके विवाह ने उनकी आध्यात्मिक यात्रा में बाधा डाली। वे सिर्फ़ कृष्ण भक्ति में लीन रहना चाहती थी।

उनके विवाह के कुछ सालों पश्चात उनके पति भोजराज का निधन हो गया, जिससे उन्हें विधवाओं के लिए बनाए क्रूर व्यवस्था वाले समाज का मुक़ाबला करना पड़ा। परंतु मीराबाई ने उन दृष्टान्तों को स्वीकार नहीं किया और उन्होंने स्वयं के लिए चुनौती का मार्ग चुना जिसमें उनका जीवन बहुत कठिन होने वाला था। Pandey (2026)

6. मीरा द्वारा निर्धारित नए आदर्श: वैधव्य जीवन का खंडन

मीरा ने अपने काव्य के द्वारा मध्यकालीन भारत के समाज को चुनौती दी, जिसमें नारीवादी चेतना के लिए नई जागृति थी। उन्होंने विधवाओं के लिए बनाए गए सामाजिक एवं धार्मिक प्रतिमानों को ध्वस्त किया और महिलाओं की आध्यात्मिक स्वतंत्रता के लिए अपने नए प्रतिमान स्थापित किए।

7. सती-प्रथा का प्रतिवाद तथा नए जीवन का निर्णय

सर्वप्रथम मीरा ने अपने पति की चिता पर सती होने से इनकार किया क्योंकि वे यह समझती थी कि नश्वर शरीर के लिए अपने प्राण देना निरर्थक है। वे वास्तविक रूप में अविनाशी प्रतिरूप गिरधर गोपाल को अपना पति मानती थी। सती न होने का उनका यह निर्णय राजपूत समाज में अपमान का विषय माना गया परंतु उन्होंने सतीप्रथा का विरोध करके ईश्वर के प्रति उनकी आस्था दिखाई और समाज में नया क़दम उठाया ।

8. वेशभूषा तथा श्रृंगार का चुनाव

मीराबाई ने समाज की इच्छा अनुसार सफ़ेद वस्त्र धारण न करके कृष्ण भक्ति में लीन होकर रंगीन वस्त्र पहने और श्रृंगार करना नहीं त्यागा। उन्होंने दुनिया को यह बताया कि उनका पति कृष्ण है और वह जीवित है, इसलिए उन्होंने विधवा जीवन का प्रतीक श्वेत वस्त्र धारण न करके पीले वस्त्रों का चुनाव किया जो उनकी श्रीकृष्ण के प्रति अटूट भक्ति को दर्शाते थे। मीरा ने तुलसी की माला गले में धारण की और माथे पर तिलक लगाकर श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति और अटूट प्रेम को दर्शाया। वे पैरों में घुँघरूओं को बाँध कर सार्वजनिक रूप से नाचकर कृष्ण भक्ति में लीन रहती थी। उनका यह कृत्य समाज में अपराध था।

9. सामाजिक और कुल की मर्यादा का त्याग

मध्यकाल में महिलाओं के लिए उनके कुल की मर्यादा की रक्षा करना उनका कर्तव्य माना जाता था। मीरा ने इस बात का खंडन किया और मंदिरों में साधु-संतों की संगत की जिसे राजघरानों की विधवाओं के लिए है प्रतिबंधित माना जाता था। उनके अनुसार ईश्वर भक्ति कुल की मर्यादा से सर्वश्रेष्ठ है।

10.चिर सौभाग्य' तथा 'शाश्वत पति' की अवधारणा

मीराबाई ने विधवा महिलाओं पर से यह कलंक मिटाने के लिए भी समाज में 'अखंड सौभाग्य 'की नई अवधारणा प्रस्तुत की, जिससे विधवा महिलाओं को समाज में एक नई गरिमा मिली।

11.ईश्वर को पति के रूप में देखना

मीरा ने सार्वजनिक रूप से श्रीकृष्ण को अपना वर चुना और दुनिया में यह बताया है कि उनका पति अविनाशी है, तो वह कभी विधवा नहीं होगी। उनके लिए पति एक शारीरिक रूप नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक रूप था। मीरा द्वारा लिखित पदों में भी यह बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

12. सामाजिक प्रतिबंध और राज्य अधिकार का विरोध

मीरा के विरोध ने सामंती राज्य सत्ता को हिलाकर रख दिया। विक्रमादित्य जो मीरा के देवर थे उन्होंने मीरा द्वारा की जा रही गतिविधियों को राजकीय मर्यादा के विरुद्ध माना और उन्हें तड़पाने के लिए बहुत सारे प्रयास किया। उनके ससुर राणा ने उनको मारने के लिए ज़हर का प्याला भेजा, काँटों पर सुलाया और साँप का पिटारा भेजा। मीरा ने इन सारे कष्टों को ईश्वर का प्रसाद समझ कर स्वीकार किया परन्तु अपनी भक्ति पर दृढ़ रूप से क़ायम रही। इन सब बातों ने यह सिद्ध किया कि एक महिला आंतरिक रूप से बहुत शक्तिशाली होती है, चाहे उस पर कितने ही बाहरी अत्याचार किए जाएँ।

13.जाति-प्रथा का बहिष्कार और गुरू रैदास का सानिध्य

मीरा ने उच्च राजपूत वंश में जन्म लेने के बावजूद संत रैदास को अपना गुरु बनाया जो चमार जाति से ताल्लुक़ रखते थे। समाज की दृष्टि में एक कुल की राजपूत वंशज महिला के लिए अपराध था। परंतु मीरा ने भक्ति को प्रमुखता दी तथा जाति के भेद को खंडित किया।

14.मीरा की काव्य कृतियाँ

मीरा ने अपने काव्य में धार्मिक भजन के साथ महिलाओं के संघर्ष तथा उनकी पीड़ा को जीवंत किया। उनके काव्यों में लोकभाषा का समावेश था, जिसमें मारवाड़ी, गुजराती, ब्रज और राजस्थानी भाषा का समावेश था। उनका यह क़दम विद्रोही था क्योंकि मध्यकाल में धर्म और साहित्य पर सिर्फ़ पुरुषों का अधिकार होता था। उनका काव्य उस आम जनता के लिए लाभदायी रहा, जो संस्कृत नहीं जानते थे। उनके इस क़दम ने समाज में नई चेतना का उद्गार किया।

15.निष्कर्ष

अतः उच्च राजकुल में जन्म लेने के पश्चात भी मीराबाई एक ऐसी महिला थी जिन्होंने सामंती ऐश्वर्य को त्यागकर भक्ति का मार्ग चुना तथा श्रीकृष्ण का पति के रूप में वरण किया। उन्होंने जात-पात का खंडन करके भक्ति को ही सर्वोपरि माना, विधवा महिलाओं के लिए नए मानक स्थापित किए, सती-प्रथा का विरोध किया तथा स्त्री के सौभाग्य को क़ायम करने के लिए श्रृंगार को भक्ति का माध्यम बनाया।

REFERENCES

Agrawal, P. (2009). The untold story of love: Kabir's poetry and his times (अकथ कहानी प्रेम की: कबीर की कविता और उनका समय). Rajkamal Prakashan.

Dwivedi, H. P. (1952). Medieval religious practice (मध्यकालीन धर्म-साधना). Rajkamal Prakashan.

Gupta, U. (1970). Sweet devotion in Hindi Krishna poetry (हिंदी कृष्ण-काव्य में माधुर्य भक्ति). Sahitya Bhavan.

Kishwar, M. (1996). Mirabai: A new perspective (मीराबाई: एक नई दृष्टि). Vani Prakashan.

Mukherjee, S. (2012). Women in medieval India: A historical analysis (मध्यकालीन भारत में नारी: एक ऐतिहासिक विश्लेषण). Takshashila Prakashan.

Pandey, R. K. (2026). Alcohol Ban and Populist Policies: New Dimensions of Women's Politics in Bihar., ShodhSamajik: Journal of Social Studies., 3(1), 32-39. https://doi.org/10.29121/ShodhSamajik.v3.i1.2026.72

Pareekh, H. (2005). Medieval society of Rajasthan (राजस्थान का मध्यकालीन समाज). Rajasthan Hindi Granth Academy.

Rai, R. (1998). Mirabai: Life and philosophy (मीराबाई: जीवन और दर्शन). Chaukhamba Vidya Bhavan.

Sharma, K. G. (2014). Medieval Indian society and culture (मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति). Rajasthan Hindi Granth Academy.

Shukla, R. (1929). History of Hindi literature (हिंदी साहित्य का इतिहास). Nagari Pracharini Sabha.

Singh, N. (1982). In search of the second tradition (दूसरी परंपरा की खोज). Rajkamal Prakashan.